अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : प्रथम - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) उत्कृष्ट छह आवलिका की स्थिति वाला गुणस्थान है-

(क) मिथ्यात्व (ख) सास्वादन

(ग) निवृत्ति बादर (घ) सूक्ष्म संपराय ( )

(b) पच्चक्खाण का फल है-

(क) ज्ञान (ख) अनास्रव

(ग) संयम (घ) सिद्धि ( )

(c) मध्य के 22 तीर्थंकरों के समय यह चारित्र नहीं पाया जाता है -

(क) परिहार विशुद्धि (ख) सामायिक

(ग) यथाख्यात (घ) सूक्ष्म संपराय ( )

(d) ''मिथ्यादृष्टि को अनुकम्पावश दान देने का निषेध नहीं है''यह किसका भेद है -

(क) आगार (ख) लक्षण

(ग) यतना (घ) प्रभावना ( )

(e) ''करुँ नहीं अनुमोदू नहीं-मनसा कायसा'' भंग है -

(क) 27वाँ (ख) 32वाँ

(ग) 38वाँ (घ) 35वाँ ( )

(f) सुपच्चक्खाण का थोकड़ा भगवती सूत्र में से लिया है-

(क) शतक 2 उद्देशक 7 (ख) शतक 7 उद्देशक 2

(ग) शतक 1 उद्देशक 7 (घ) शतक 7 उद्देशक 1 ( )

(g) तिर्यंच गति में सबसे कम संज्ञा होती है-

(क) आहार (ख) भय

(ग) मैथुन (घ) परिग्रह ( )

(h) एक जीव में आत्म प्रदेशों की संख्या है-

(क) संख्यात (ख) असंख्यात

(ग) अनन्त (घ) एक ( )

(i) अनाहारक अवस्था में पाया जाने वाला योग है-

(क) कार्मण (ख) ओदारिक मिश्र

(ग) वैक्रिय मिश्र (घ) वैक्रिय ( )

(j) समकित, धर्म रूपी प्रासाद की है -

(क) पेटी (ख) दरवाजा

(ग) दुकान (घ) नींव ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) महाविदेह क्षेत्र में परिहार विशुद्धि चारित्र नहीं होता है। ( )

(b) संलेखना सर्वउत्तर गुण रूप ही है। ( )

(c) दृष्टान्तपूर्वक अन्यमतियों से वाद करके धर्म को दीपाने वाला धर्मकथा प्रभावक है। ( )

(d) किन्नर परमाधामी देव है। ( )

(e) स्व और पर का भेद-विज्ञान होना सम्यग्दृष्टि है। ( )

(f) उपशांत मोहनीय गुणस्थान की स्थिति अन्तर्मुहूर्त नहीं है। ( )

(g) 'परमाणु' पुद्गल का भेद है। ( )

(h) संज्ञा का थोकड़ा भगवती सूत्र से लिया गया है। ( )

(i) द्रव्य की अपेक्षा जीव अशाश्वत है। ( )

(j) मोक्ष की तीव्र इच्छा 'संवेग' है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(a)	वीरासन	(क) कृष्ण लेश्या	.....
(b)	पृच्छना	(ख) जीवास्तिकाय	.....
(c)	निर्दयी	(ग) देशावगासिक व्रत	.....
(d)	मायावी	(घ) उपभोग-परिभोग	.....
(e)	चन्द्रमा की कला	(च) काल-द्रव्य	.....
(f)	14 नियम	(छ) सर्व उत्तरगुण पच्चक्खाण	.....
(g)	असंवृत	(ज) काय-क्लेश	.....
(h)	वर्तन गुण	(झ) नील लेश्या	.....
(i)	सागारं	(य) दुपच्चक्खाण	.....
(j)	कर्मादान	(र) स्वाध्याय	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x2 = (20)**

(a) **मैं शरीर की पुष्टता के कारण पैदा होती हूँ।** .....

(b) **मैं धर्म रूपी भोजन का थाल हूँ।** .....

(c) **मेरी आराधना नौ मुनि एक साथ करते हैं।** .....

(d) **मेरा आकार सिंघाडे के सामान है।** .....

(e) **मैं बादलों की तरह मिलता व बिखरता हूँ।** .....

(f) **मेरा वर्ण हल्दी के टुकड़े व पटसन के फूल के सामान पीला होता है।** .....

(g) **मेरी प्राप्ति घाति कर्मों के क्षय होने पर होती है।** .....

(h) **हम कर्मों का क्षय करके मोक्ष में जाते हैं।** .....

(i) **मैं तीसरी नरक तक के जीवों को वेदना देता हूँ।** .....

(j) **मेरे द्वारा मात्र वर्तमान की ही जानकारी होती है।** .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) **पडिवाई को समझाइए।**

.....

.....

.....

(b) **इत्वरिक सामायिक चारित्र का काल कितना होता है?**

.....

.....

.....

(c) **आस्रव तत्त्व की परिभाषा लिखिए।**

.....

.....

.....

(d) **अजीव राशि में स्पर्श के भेद बताइए।**

.....

.....

.....

(e) **49 भंगों में से 37वाँ व 23वाँ भंग लिखिए।**

.....

.....

.....

(f) **प्रभावना को परिभाषित कीजिए।**

.....

.....

.....

(g) **नियंटियं को समझाइए।**

.....

.....

.....

(h) **मनुष्य गति से आये हुये जीव में संज्ञा किस क्रम से कम-अधिक पाई जाती है?**

.....

.....

.....

(i) **वितिगिच्छा को परिभाषित कीजिए।**

.....

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **8x4 = (32)**

(a) **नरक गति की अपेक्षा संज्ञा का अल्प बहुत्व लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **शुद्धि को परिभाषित कर उसके भेदों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **अद्धा तप किसे कहते हैं ? उसके भेदों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **लोक संज्ञा को समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **49 भंग में से अंक 21 के बनने वाले भंग लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **नौ लोकान्तिक तथा नवग्रैवेयक के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **विषय और विकार का अर्थ स्पष्ट करते हुए घ्राणेन्द्रिय के विकार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **उपशम श्रेणि किसे कहते हैं ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....